Date:-16/05 /2020.

Day: - Saturday. Time: - 10:30 to 11:20.

Class:- B.Ed. session (2019 21) 1st year. Subject: - contemporary India and Education. Paper:-2

Topic (e- content):- प्रयोजनवाद (PRAGMATISM)

प्रयोजनवाद

नामकरण :
चार्ल्स सेण्डर्स पीयर्स के अनुसार अर्थक्रियावाद/व्यवहारवाद
विलियम्स अनुभववाद/कलावाद
जॉनडिवी साधनवाद/ प्रयोगवाद
किलपैट्रिक प्रयोजनवाद
प्रयोजनवाद या व्यावहारिकवाद एक भौतिक वादी दर्शन है प्रयोजनवाद शब्द की उत्पत्ति ग्रीक भाषा के प्रैग्मा शब्द से हुई है जिसका अर्थ है क्रिया अथवा किया गया कार्य कुछ अन्य विद्वानों के अनुसार यह शब्द ग्रीक भाषा के प्रेग्माटिकोस शब्द से लिया गया है जिसका अर्थ है व्यावहारिकता अथवा उपयोगिता। अतः इस विचारधारा के अंतर्गत क्रियाशीलता तथा व्यावहारिकता को महत्वपूर्ण स्थान दिया है। प्रयोजनवादियों का मानना है कि पहले किया गया कार्य या कोई भी किया गया प्रयोग पहले होता है फिर उसके फल के अनुसार विचारों अथवा सिद्धांतों का निर्माण होता है। इसीलिए प्रयोजनवाद को प्रयोगवाद अथवा फलवाद के नाम से भी पुकारा जाता है प्रयोजनवाद को फलवाद इसलिए कहा जाता है क्योंकि इस विचारधारा के अनुसार प्रत्येक क्रिया का मूल्यांकन उसके परिणाम अथवा फल के अनुसार निश्चित किया जाता है।

प्रयोजनवाद का नारा है परिवर्तन इस दृष्टि से कोई भी सत्य स्थानीय होकर सदैव परिवर्तन की अवस्था में है। अतः प्रयोजनवाद का दावा है कि सत्य सदैव परिस्थिति के अनुसार बदलता रहता है। प्रयोजनवाद को प्रयोगवाद इसलिए कहा जाता है क्योंकि प्रयोजनवादी केवल प्रयोग को ही सत्य की श्रेणी में रखते हैं। उनके अनुसार सत्य वास्तविकता, अच्छाई तथा बुराई सब एक सापेक्ष शब्द है। यह पूर्व निश्चित नहीं है अपितु इन सबको मानव अपने प्रयोग तथा अनुभवों के द्वारा सिद्ध करता है। अतः प्रयोजनवाद के अनुसार वही बातें सत्य हैं जिन्हें प्रयोग के द्वारा सिद्ध किया जा सके। प्रयोजनवादियों का यह विश्वास है कि जो विचार अथवा सिद्धांत सत्य थे। यह आवश्यक नहीं है आज भी वह सत्य ही हो। अतः प्रयोजनवाद आदर्शवादियों की भांति पूर्व निश्चित तथा प्रचलित सिद्धांतों के अनुसार निरंतर आदर्शों तथा मूल्यों को स्वीकार ना करके प्रत्येक निश्चित दर्शन का विरोध करते हैं तथा इस बात पर जोर देता है कि केवल वही आदर्श तथा मूल्य सत्य है जिसका परिणाम किसी काल तथा परिस्थिति में मानव के लिए व्यावहारिक लाभदायक फलदायक तथा संतोष जनक हो। प्रयोजनवाद के मुख्य प्रवर्तक **C. B. Pearce William James, John dewey** है।

संक्षेप में एक दार्शनिक विचारधारा के रूप में प्रयोजनवाद किसी निश्चित शाश्वत मूल्यों विचारों में विश्वास नहीं करता प्रयुक्त व्यक्ति को स्वयं वैज्ञानिक ढंग से इसके निर्माण पर बल देता है। इसकी मान्यता है कि मूल्य विचार, आदर्श समय-समय पर बदलते रहते हैं। मनुष्य का चरम लक्ष्य सुख अनुभूति है और इस संसार में आध्यात्मिकता नाम की कोई चीज नहीं है।
प्रेट के अनुसार " प्रयोजनवाद हमें अर्थ का सिद्धांत सत्य का सिद्धांत ज्ञान का सिद्धांत तथा वास्तविकता का सिद्धांत देता है।"
विलियम जेम्स के अनुसार " प्रयोजनवाद मस्तिष्क का एक स्वभाव और अभिवृत्ति है यह विचार और सत्य की प्रगति का सिद्धांत है और अंत में यह वास्तविकता का सिद्धांत देता है।"
रोमन के अनुसार " प्रयोजनवाद के अनुसार सत्य को उसके व्यवहारिक परिणामों के द्वारा जाना जाता है इसलिए सत्य निरपेक्ष ना होकर व्यक्तिगत अथवा सामाजिक समस्या है।"

प्रयोजनवाद के सिद्धान्त

एक मानवतावादी दर्शन होने के कारण प्रयोजनवाद संसार एवं उसकी वस्तुओं तथा क्रियाओं के कारणों पर उस गंभीरता से विचार नहीं करता जितना मानव जीवन में उसकी उपयोगिता पर विचार करता है। एक स्वतंत्र दर्शन के रूप में अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए प्रयोजनवाद ने मानव को आधार बनाते हुए संसार एवं उसकी क्रियाओं के कारणों पर विचार करते हुए निम्नलिखित मूल सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है-

- (१) प्रयोजनवाद किसी भी शाश्वत 'मूल्य' तथा शाश्वत 'सत्य' में विश्वास नहीं करता है। इसकी धारणा है कि मूल्य एवं सत्य देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुसार बदलते रहते हैं। प्रयोजनवाद यदि किसी शाश्वत मूल्य में विश्वास करता है तो वह 'शिव' (उपयोगिता) है। इसलिए जीवन के स्थायी एवं निश्चित आदर्श की सत्ता को स्वीकार नहीं करता।

- (२) प्रयोजनवादी व्यावहारिक जीवन मात्र से सम्बन्ध रखना उचित समझते हैं। ईश्वर, आत्मा, धर्म, इत्यादि का व्यावहारिक जीवन से सम्बन्ध न होने के कारण इनका कोई महत्व नहीं है।

- (३) प्रयोजनवाद यह मानता है कि इस संसार में यथार्थ (reality) का ज्ञान संभव नहीं है।

- (४) प्रयोजनवाद की यह धारणा है कि मनुष्य 'परिकल्पना' का प्रयोग करके ज्ञान के समीप पहुंँच सकता है।

- (५) प्रयोजनवादी अंधविश्वास का विरोध करते हैं। वे विज्ञान में तो विश्वास करते हैं किन्तु यन्त्रवादी नहीं होते। वे विकास का समर्थन करते हैं। प्रयोजनवाद शाश्वत वास्तविकता में विश्वास नहीं करता है क्योंकि उसके अनुसार वास्तविकता का निर्माण होता रहता है।

- (६) प्रयोजनवादियों के अनुसार सत्य कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो पहले से विद्यमान हो। परिस्थितियों के परिवर्तन के फलस्वरूप मनुष्य के समक्ष अनेक समस्यायें उत्पन्न होती है जिनकी पूर्ति के लिए मनुष्य चिन्तन करता है। चिन्तन में आये सभी विचार सत्य नहीं होते, सत्य केवल वे ही विचार होते हैं जिनके प्रयोग से सन्तोषजनक फल की प्राप्ति होती है।

- (७) प्रयोजनवाद समाज में व्याप्त रूढ़ियों, मान्यताओं, परम्पराओं, बन्धनों, अंधविश्वासों आदि में कोई आस्था नहीं रखता। यह जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में, जीवन की अनेक प्रकार की क्रियाओं में ज्यादा विश्वास करता है। प्रयोजनवाद के अनुसार विचारों की उत्पत्ति क्रिया के बाद होती है, इसलिए विचारों की अपेक्षा क्रिया को अधिक महत्व प्रदान किया जाता है।

- (८) मनुष्य रचनात्मक कार्य करता है, यथार्थ की रचना में भी उसका योगदान है तथा मूल्य भी मानव द्वारा ही निर्मित होते हैं।

- (९) प्रज्ञा व्यक्ति को वातावरण के अनुकूल बनाने की शक्ति देती है।

- (१०) आदर्शवादी विचारकों के समान प्रयोजनवादी विचारक भी मनुष्य को विश्व का सर्वोच्च प्राणी मानते हैं। प्रयोजनवादियों के अनुसार मनुष्य ही एक ऐसा मनःशारीरिक प्राणी है जो अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए अनेक प्रकार की उच्चतम क्रियायें करता है। वह क्रियाओं की उपयोगिता एवं अनुपयोगिता को देखकर अनुभवों का संचय करता है तथा मानव-सभ्यता का सृजन एवं संवर्द्धन करता है।